हूण आक्रमण

डॉ0 मकसूद आलम*

जिस जाति ने, 165 ई0पू0 में यूह–ची (कुषाण) जाति को चीन की पश्चिमोत्तर सीमा से निकाल कर सम्पूर्ण मध्य–एशिया और भारत की राजनीति को प्रभावित किया था वह हूणों 'हिंग–नू' की थी। कुछ दिनों बाद जनसंख्या की वृद्धि और प्रसार की आकांक्षा से वह पश्चिम की ओर चल पड़ी। आगे बढ़ने पर इसकी दो शाखायें हो गयीं। एक शाखा ने सीधे पश्चिम यूराल पर्वत को पार करके 375 ई0 के लगभग, आधे यूरोप को आक्रांत कर लिया। इसने गाथ जाति को डैन्यूब नदी के दक्षिण ढकेल दिया। गाथों ने रोम–साम्राज्य पर आक्रमण किया। इस गाथ–यूद्ध में रोमन सम्राट वैलेन्स को 378 ई0 में अपने प्राण खोने पड़े। हूण, वोल्गा और डेन्यूब के बीच के सभी प्रदेश पर छा गये। वे यूरोप के लिए भयंकर हौवा हो गये। एक अच्छे नेता के अभाव में हूण तितर–बितर हो गये थे परन्तु अतिला ने आकर हूणों की शक्ति फिर संगठित कर ली और आतंक सारे यूरोप पर फैल गया। 453 ई0 में उसकी मृत्यु से ही यूरोप को त्राण मिला।

18–20 वर्ष के अत्याचारपूर्ण शासन के बाद राजनीतिक सत्ता के रूप में हूणों की शक्ति नष्ट हो गयी। दूसरी शाखा दक्षिण की ओर मुड़, वंक्षु(आक्सस) के किनारे पहुँचे। यहाँ पर यह सासानी साम्राज्य से दबे रहे। लेकिन 484 ई0 में उसके ह्रास के बाद हिन्दूकुश को पार कर हूण भारत की ओर बढ़ने लगे। 450 ई0 में हूणों ने फारस के राजा फिरोज को मार डाला। जब तक भारत में गुप्त साम्राज्य प्रबल था, तब तक हूण उससे टकरा कर वापस चले जाते थे। परन्तु उसकी शक्ति क्षीण होने पर लगभग 500 ई0 के पूर्व टिड्डी–दल की तरह हूण पश्चिमोत्तर और मध्य भारत में छा गये।

इनका नेता तोरमाण था जिसका इतिहास सिक्कों, उत्कीर्ण लेखों और राजतरंगिणी से मालूम होता है। परन्तु हूणों की सत्ता भारतवर्ष में भी बहुत दिनों तक ठहर न सकी। जैसा कि लिखा जा चुका है, भानुगुप्त बालादित्य ने 510 ई0 में मध्य भारत से हूणों को निकाल दिया। इस घटना की पुष्टि भानुकुप्त के गुप्त सं0 191 के एरण लेख और बौद्ध अनुश्रुति से होती है। इसके बाद हूण पश्चिमोत्तर भारत तक सीमित रहे और उनकी राजधानी साकल(स्यालकोट) थी।

***ग्राम–जहानाबाद, थाना+अंचल–कुदरा, जिला कैमूर, बिहार**

*

तोरमाण के बाद उसका पुत्र मिहिरकुल हूणों का राजा हुआ। मिहिरकुल अपने पिता से भी बढ़कर क्रमर और आततायी शासक था। उसके नृसंश कृत्यों एवं अत्याचारों का वर्णन कल्हण तथा युवाँच्वाँग दोनों ने किया है। यद्यपि उसने शैव धर्म ग्रहण कर लिया था किन्तु जातीय स्वभाव के कारण वह बड़ा क्रूर और अत्याचारी था। युवाँच्वाँग के वर्णनों से प्रतीत होता है कि वह बौद्धों को घोर शत्रु था। अधिक संख्या में उसने बौद्धों को मरवा डाला और स्तूपों, बौद्ध विहारों को जलवा दिया। ऐसा कहा जाता है कि वह हाथियों का भी शत्रु था। पहाड़ों की चोटियों से गिराकर उनकी चिंग्घाड़ और आर्त्तनाद को सुनकर वह बड़ा आनंदित होता था।

ह्वेनसांग के वर्णनानुसार, मिहिरकुल ने मगध के नरेश बालादित्य पर आक्रमण किया था परन्तु बालादित्य ने उसे परास्त कर अपने बन्दीगृह में डाल दिया। किन्तु बाद में अपनी धर्मपरायणा माता के कहने से मिहिरकुल को क्षमा करके उसे मुक्त कर दिया। तदनन्तर मिहिरकुल कश्मीर पहुँचा, जहां राजा ने उसको शरण दी। किन्तु वह इतना क्रूर और कृतघ्न था कि वहाँ के राजा का वध कर डाला और स्वयं कश्मरी का राजा बन बैठा। कश्मरी पर वह अधिक दिनों तक शासन न कर सका। राजतरंगिणी के अनुसार उसने केवल एक वर्ष तक शासन किया था।

इस प्रसंग में एक ऐतिहासिक समस्या पुनः उठ खड़ी होती है। वह यह है कि जिस बालादित्य ने मिहिरकुल को परास्त किया वह कौन था। किस काल में और कहाँ का षासक था? अनुशीलन करने पर ज्ञात होता है कि तोरमाण को परास्त करनेवाला मगधराज भानुगुप्त बालादित्य ही ह्वेनसांग का बालादित्य है। उसने मध्यभारत से हूणों को मार भगाया जिसके कारण उनको विविश होकर कश्मीर में शरण लेनी पड़ी।

सन 528 ई0 में मिहिरकुल को मालव के राजा यशोधर्मन् ने मुल्तान के आस–पास पराजित किया। इस पराजय के पश्चात् हूणों के पैर उखड़ गये और उनकी शक्ति क्रमशः विनष्ट हो गयी। वस्तुतः देखा जाय तो हूणों की शक्ति उनकी तेजी, संख्या और नृशंसता में थी। उनमें राज्य–संचालन और राज्य–संगठन की प्रतिभा का अभाव था। यही कारण है कि उनके पाँव यूरोप और भारत दोनों स्थानों पर नही ंजम पाए। कालान्तर में क्रमशः हूण भारतीय जनता के साथ मिलते गये और धीरे–धीरे भारतीय रंग में ही रंग गए।

गुप्तोत्तर कालीन भारत पर अनेक बार विदेशियों ने आक्रमण किए। प्रारम्भ में अरबों ने आक्रमण किये किन्तु विशेष सफलता प्राप्त न कर सके। अरबों के आक्रमण सातवीं तथा आठवीं शताब्दियों में हुए थे। तत्पश्चात् दसवीं से बारहवीं

शताब्दी तक तुर्कों ने समय–समय पर भारत पर आक्रमण किये। तुर्कों के प्रारम्भिक आक्रमणों का उद्देश्य तो मात्र धन–सम्पत्ति लूटना था किन्तु बाद में उनका उद्देश्य साम्राज्यवादिता में बदल गया। तुर्कों के आक्रमणों से भारत को अत्यधिक हानि हुई क्योंकि उन्होंने न केवल धन–सम्पत्ति पर अधिकार किया वरन् हिन्दू राज्य के स्थान पर तुर्क–शासन की स्थापना की । इस प्रकार हिन्दू–राज्य का स्वतन्त्र अस्तित्व ही समाप्त हो गया।

संदर्भ

1. स्कन्दगुप्त का भीतरी स्तम्भ अभिलेख
2. ध्न्यविष्णु का एरण अभिलेख, लीट, गुप्त अभिलेख स. 36
3. यशोधर्मन का मन्दसौर अभिलेख, लीट, गुप्त अभिलेख
4. द क्लासिकल एज
5. हेग व कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इण्डिया
6. डॉ0 आर0सी मजूमदार, द स्ट्रगलर फॉर एम्पायर

******

मन्नू भंडारी की भाषिक सर्जनात्मकता

डॉ0 डेजी कुमारी*

ABSTRACT:- भाषा सृजन की अनिवार्य शर्त है। किसी भी रचना का उसके पाठक वर्ग से सही तालमेल सर्वप्रथम भाषिक स्तर पर ही बैठता है। अतः भाषा जितनी सहज और संप्रेषणीय होगी, पाठक वर्ग कथ्य को और उस कथ्य के माध्यम से अभिव्यक्त लेखक के मनोभावों और विचारों को उतना ही नजदीक से महसूस कर पाएगा। भाषा सिर्फ कुछ भारी–भरकम शब्दों का नाम नहीं है। भाषा एक सम्वेदना है। विभिन्न मनः स्थितियों और परिस्थितियों को समझने और विश्लेषित करने की सुखद चेष्टा। यह सम्वेदना जितनी सामाजिक होगी भाषा उतनी ही लचीली होगी, व्यापक होगी। परिवेश, चरित्र और चरित्रों की मनः स्थितियों में आए बदलावों की सूक्ष्म पकड़ से उपजी लेखकीय प्रत्युत्पन्नमति ही लचीली भाषा का निर्माण करती है। इन बदलावों के साथ भाषा में आया बदलाव अपेक्षित भी है और कथ्य के स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद भी। भाषा का 'रूप बदलना' इसी को कहते हैं। वह जितना अधिक रूप बदलती है उतनी ही स्पष्टत्तर होती जाती है और उसका यह लचीलापन ही कथ्य की सजीवता को अन्त तक बचाए रखता है।

मन्नू भंडारी का समूचा साहित्य जिस सहजता, संवेदना और पठनीयता के लिए जाना जाता है वही सहजता, संवेदना और पठनीयता उनकी भाषा में अंतर्निहित है, अन्यथा क्या वजह है कि मन्नू भंडारी व्यापक पाठक समाज के बीच उतनी ही लोकप्रिय रही हैं जितनी साहित्यिक और समालोचक जगत में। शास्त्रीयता, कलात्मकता और अमूर्तता के प्रभाव से दूर पानी की निर्मल धारा–सी बहती मन्नू की भाषा अपने सधे, सरल और सघन रूप में अपना प्रभाव छोड़ती है।

Key Words: मन्नू भंडारी, भाषा, सर्जनात्मकता, सम्प्रेषण आपका बंटी, महाभोज, एक इंच मुस्कान

भाषा मुँह से उच्चारण किए जानेवाले संकेतों की वह व्यवस्था है जिसके द्वारा एक सामाजिक समूह के सदस्य सहयोग तथा अन्तःक्रिया करते हैं, और जिसके मासे सीखने की प्रक्रिया को सफल बनाया जाता है एवं जीवन की एक विधि–विशेष को निरन्तरता तथा परिवर्तनशीलता दोनों ही प्राप्त होती है। सामान्यतः

***एम0ए0 (हिन्दी), बी0एड0, पी–एच0डी0**
(ति0 माँ0 भा0 वि0 वि0, भागलपुर)